उपयोग से ही वस्तु का महत्व

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव जीवन में सभी वस्तुओं का किसी न किसी दृष्टि से उपयोग होता है। प्रकृति की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसका उपयोग न हो। उपयोग से ही वस्तु का महत्व है। किसी भी वस्तु का उपयोग हम कैसे करते हैं यह महत्वपूर्ण है। ईश्वर ने इस संसार में किसी भी वस्तु को निरूपयोगी नहीं बनाया है। वस्तु का उपयोग करने से ही उसका महत्व बढ़ता है। उदाहरण के लिए आपके पास बहुत बड़ा बंगला है यदि आप उसे ताला बन्द करके रखते हैं तो वह बंगला किस काम का। यदि आपके पास बहुत अधिक ज्ञान है और आप उस ज्ञान का उपयोग दूसरों को देने में नहीं करते तो उस ज्ञान का क्या महत्व है। ज्ञान का सार आचार है। ज्ञान को आचरण में उतारना ज्ञान को दूसरों में बांटना आवश्यक है। चलती का नाम गाड़ी है रूक गई तो खटारा है यदि गाड़ी में सिस्टम खराब हो जाए तो वह रूक जाती है। यदि उसका उपयोग करते हैं तो उसका महत्व है। यदि हम दूसरों के लिए ज्ञान बांटने का साधन नहीं बनते तो हमारे ज्ञान से क्या लाभ? जीवन में पग–पग पर उपयोग का महत्व है। आप बहुत अच्छे अध्यापक हैं किन्तु बच्चों को ज्ञान नहीं बांटते तो आपके ज्ञान का क्या महत्व है? ज्ञान को ग्रहण करने में पात्रता और गुण ग्रहकता की आवश्यकता होती है। सरकार किसी भी कार्य के लिए योजना बनाती है। मानलीजिए एक फिल्टर प्लान्ट लगाना है, यदि पूरी योजना बन गयी कार्य भी पूरा हो गया किन्तु उसके उपयोग में यदि कमी रह जाए तो उस प्लान्ट की क्या उपयोगिता रह जाएगी। वह तो केवल एक वस्तु बनकर रह गई। जीवन में वस्तु का उपयोग होना चाहिए दुरूपयोग नहीं। चाकू का कार्य सब्जी काटने के लिए है दूसरों को मारने या काटने के लिए नहीं। मानसिकता का सम्बन्ध उपयोग एवं दुरूपयोग से है। जब नकारात्मक विचार होता है तो वस्तु का उपयोग ठीक से नहीं होता। यदि सकारात्मक विचार होता है तो बुरी वस्तु भी अच्छी हो जाती है। मन से अच्छा चिंतन, बचन से अच्छी वाणी ओर काया से अच्छा कार्य करें तो वस्तु का उपयोग है।

सृष्टि में विचारों का इतना प्रदूषण हो गया है कि उसे ठीक करना आवश्यक है। क्रोध सभी को आता है। क्रोध के आने पर उसके सामने क्षमा के भाव को खड़ा कर देना चाहिए। अवगुणों के सामने गुणें को खड़ा कर देना चाहिए। जब अवगुण कम हो जायेगा और गुण बढ़ेगा तब विचार सकारात्मक हो जायेंगे। वस्तु का महत्व उनके उपयोग से है। समाज और राष्ट्र में अच्छी बातों का प्रचार और प्रसार करना मानव का उपयोग है। लोगों में उपदेश के माध्यम से, पुस्तकों के माध्यम से प्रचार–प्रसार करके हम उपयोगी बन सकते हैं। शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम् अर्थात शरीर धर्म का साधन है। यदि शरीर स्वस्थ है तो धर्म करने में आसानी होती है। यदि शरीर ही अस्वस्थ रहेगा तो सभी प्रकार के क्रियाकलाप सम्पन्न ही नहीं हो सकेगे। इसलिए वस्तु की उपयोगिता पर ध्यान रखकर कार्य करना चाहिए। जिसकी दृष्टि जैसी होती है उसको सृष्टि वैसी ही दिखलायी देती है। सज्जन व्यक्ति को संसार में सब सज्जन ही दिखलायी देते है और दुर्जन व्यक्ति को सब दुर्जन ही दिखलायी देते हैं। अच्छाई और बुराई बाहर नहीं हमारे नेत्रों में होती है। इसलिए अपनी दृष्टि सम्यक् रखनी चाहिए। भगवान महावीर, भगवान बुद्ध ने सत्य को देखा। दुःखी मानवता को दुःख से मुक्त करने के लिए उपाय बतलाया। भगवान् बुद्ध ने कहा सर्वं दुःखं अर्थात् यह जगत् दुःख पूर्ण है। जन्म लेना, प्रिय से वियोग, अप्रिय से संयोग सब दुःख है। दुःखों को दूर करने के लिए भगवान बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग का उपदेश दिया। भगवान महावीर ने सृष्टि में सर्वत्र आत्मदर्शन किया। षट्जीव निकाय की प्ररूपणा की। अपने समान सभी प्राणियों की रक्षा का उपदेश दिया। दृष्टि विधायक और रचनात्मक होती है तो सबकुछ ठिक प्रतीत होता है। यदि दृष्टि नकारात्मक रहती है तो सबकुछ बुरा प्रतीत होता है। दृष्टि नकारात्मक रहने पर अच्छाई भी बुराई प्रतीत होती है। अतः निष्पक्ष रहकर चिन्तन करना चाहिए। आन्तरिक भाव कभी भी नहीं बिगाड़ने चाहिए।

बीज ही वटवृक्ष बन जाता है। मनुष्य के हाथ में पुरूषार्थ है। कार्य करते रहना चाहिए, रूकावट आने पर भी धैर्य रखना चाहिए। परिस्थितियों को अनुकूल बनाना चाहिए। सकारात्मक सोच, सकारात्मक कार्य और सकारात्मक जीवन व्यतीत करना चाहिए। सृष्टि का नियम है कि जो जैसा बोता है वैसा ही काटता है।विश्व में जितने भी प्रकल्प किये जा रहे है, वे सब जगत्

कल्याण के लिए हैं। जगत् कल्याण की भावना एक बहुत ही अच्छी भावना है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना इससे जुड़ी हुई है। मानव जीवन बहुत ही बहुमूल्य है। संसार में जितने ही प्राणी हैं उसमें मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। अतः संसार के हितचिंतन की बात सोचना सबसे अधिक मानव पर है। मानव ही संसार को स्वर्ग बना सकता है और अपने बुरे कामों से इसको नरक भी बना सकता है। यह मानव तन ईश्वर सत्संग के लिए प्राप्त हुआ है। ईश्वर में आस्था रखना, पुरुषार्थ चतुष्ट्य का पालन करना, धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष के अनुसार जीवन व्यतीत करना, अहिंसा का आचरण करना, और बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की कामना करना, मानव जीवन का लक्ष्य होना